शेख़ फ़रीद - सबद २०

फरीदा थीउ पवाही दभु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा थीउ पवाही दभु ॥
जे सांई लोड़हि सभु ॥
इकु छिजहि बिआ लताड़ीअहि ॥
तां साई दै दरि वाड़ीअहि ॥१६॥

सार: पूर्णतः समर्पण एक ऐसी अवस्था है जहां व्यक्ति जीवन के प्रवाह को अपनाता है और अनगिनत संभावनाओं को खोजने का प्रयास करता है। जब नियंत्रण, परिणामों और अपेक्षाओं से जुड़ाव को छोड़ देते हैं तब वह अपने वर्तमान क्षण से एक गहरे संबंध की ओर बढ़ते हैं। यह शक्तिशाली अवस्था अंदरूनी स्वतंत्रता को बढ़ावा देती है और एक गहरी आध्यात्मिक जाग्रति के लिए रास्ता खोलती है।

फरीदा थीउ पवाही दभु ॥
फरीद का कहना है कि वह रास्ते की घास बन सकते हैं। यह उनकी साधक बनने की खोज में पूर्ण समर्पण करने का प्रतीक है।

जे सांई लोड़हि सभु ॥
जब मालिक के सार को समझने की तड़प होती है। यहां मालिक सर्वव्यापी चेतना का प्रतिनिधित्व करता है।

इकु छिजहि बिआ लताड़ीअहि ॥
एक तुम्हें काट देगा और दूसरा तुम्हें रौंद देगा। यह एक अनुकूलित मानसिकता से पैदा होने वाले चुनौतीपूर्ण दृष्टिकोण को दर्शाता है।

तां साई दै दरि वाड़ीअहि ॥१६॥

तब तुम मालिक के दरबार में हाज़िर होगे। यह दर्शाता है कि कोई भी व्यक्ति हठधर्मी विचारों की बाधा पर क़ाबू पाने के बाद ही इस सत्य का रास्ता प्राप्त कर सकता है। (१६)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद का दावा है कि कोई भी व्यक्ति अनुकूलित और हठधर्मी विचारों से पैदा होने वाली बाधा पर क़ाबू पाने के बाद ही दिव्यता तक पहुंच सकता है। इन सीमाओं और बाधाओं को पार करते हुए व्यक्ति स्वयं को आध्यात्मिकता और संपूर्ण अस्तित्व के साथ दिव्यता की एकता का अधिक गहरा अनुभव कर सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com